ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 28-30

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

स्वाभाविक और आदत के आधार पर नशींली दवाओं के प्रयोग करने की लत

आनन्द कुमार सिंह

सहायक आचार्य– समाजशास्त्र विभाग, राजाहरपाल सिंह महाविद्यालय सिगरामऊ, जौनपुर (उ0प्र0), भारत

Received- 15.08.2020, Revised- 19.08.2020, Accepted - 24.08.2020 E-mail: - rksharpur2@gmail.com

सारांश : ***समाजशास्त्रीय अध्ययन्त – आदत या लत के आधार पर दवाओं का प्रयोग जो व्यक्ति करते है। उनके बारे में जब हम सोचते हैं तो यह हमारी मानसिक सोच होती है। इसके अन्तर्गत कोई व्यक्ति आदतन किसी वस्तु का प्रयोग करता है। जब व्यक्ति पूर्ण रूप से इन दवाओं का लेने का आदी हो जाता है तो उसके छोड़ना कठिन हो जाता है और न मिलने पर अजीब सी बेचैनी घबराहट भी महसूस करता है। इन दवाओं का प्रयोग करने वाला व्यक्ति वास्तविक जगत से छुटकारा पा लेता है और जिस किसी भी कारण से इसका सेवन करता है उन परेशानियों से थोड़ी देर के लिए निजात पा जाता है।***

कुंजीभूत शब्द– आदत, लत, मानसिक सोच, अन्तर्गत, दवाओं, घबराहट, वास्तविक, परेशानियों, निजात ।

नशीली दवा प्रयोग करने वालों की विषेशताएं –

1. दवा लेने वालों में प्रबल इच्छा होती है कि वह नशीली दवाओं का किसी भी तरह प्राप्त कर ले चाहे उसे वस्तु के लिये कोई भी कीमत क्यों न देनी पड़े।
2. दवा लेने वाला व्यक्ति इसकी मात्रा को क्रमशः बढ़ाता जाता है।
3. व्यक्ति मनोवैज्ञानिक व शारीरिक रूप से इन नशीली दवाओं को वश में व पूर्णरूपेण इस पर निर्भर रहता है।
4. नशीली दवा का प्रभाव व्यक्ति व समाज के प्रगति में बाधा डालता है।

अल्कोहल (शराब) – शराब अनेक प्रकार का होता है। वैज्ञानिक इसे एथिल अल्कोहल कहते हैं। इसके प्रयोग से व्यक्ति थोड़े समय के लिए नशे में हो जाता है। व्यक्ति के पूरे शरीर पर बुरा प्रभाव कितना कम या अधिक होगा इसका निर्धारण मदिरा का मात्रा पर निर्भर करता है। बोदका, जिन और व्हिस्की आदि का प्रभाव अधिक होता है। शराब या मदिरा की उपयोगिता अन्य नशीली दवाओं से भिन्न है। क्योंकि मदिरा अनेक समाजों में अलग–अलग रूप से वहां की संस्कृति से सम्बन्धि होता है। मदिरा का प्रयोग अनेक रीति रिवाजो, धार्मिक अनुष्ठानों में भी किया जाता है। इसके प्रयोग का कुछ सामाजिक पक्ष भी है। जैसे प्रायः मदिरा पान करने वाले लोग एक साथ बैठकर पीते हैं। इससे व्यक्तिगत, सामाजिक सम्बन्धी भी बनते हैं। कुछ लोगों के लिए मदिरा साधारण सुखदायी सामाजिक क्रिया है। कुछ लोगों के लिए यह कार्य करने की क्षमता बढ़ाती है। कुछ लोग सेवन करने के उपरान्त शान्त रहते हैं और कुछ लोग सामाजिक व्यवहार भी करते हैं और कुछ लोगों के लिए अपने दुःख को भुलाने का साधन मात्र है।

लेकिन किसी भी आधार पर हम मदिरा का प्रयोग का विश्लेषण करें तो भारत में यह एक जटिल समस्या बन कर आती है। तम्बाकू सेवन करने वाले व्यक्तियों के बाद मदिरा प्रयोग करने वालों की गणना द्वितीय है। मदिरा का प्रयोग दवा के रूप में भी किया जाता है जो लोग मदिरा का प्रयोग थोड़े अंश में या फिर कभी–कभी करते है वे इसके सकारात्म प्रभाव का अनुभव करते है। यह किसी भी प्रकार बाध्यता से प्रभावित नहीं होते। यदि भोजन के पहले थोड़ी मात्रा में मदिरा लिया जाय तो यह व्यक्ति को हानि नहीं पहुंचाता। कुछ लोग मनोरंजन के लिये लेते हैं। कहीं–कहीं पर तो धार्मिक अवसरों पर इसका प्रयोग होता है। जनजातियों में कोई भी धार्मिक अनुष्ठान बिना मदिरा का पूर्ण ही नहीं होता है। आजकल व्यापार विचार विमर्श के समय मदिरा का सेवन लोग करते हैं।

ट्रेक्यूलाइजर – कुछ लोग जीवन में बहुत निराशा, उपेक्षा, कुन्ठा में जीवन व्यतीत करते हैं और सार्वजनिक रूप से साधारण व्यवहार नहीं कर पाते है तो वे ट्रेक्यूलाइजर का प्रयोग टबलेट के रूप में करते हैं और कुछ व्यक्ति उच्च रक्त चाप के नियंत्रण के लिए करते हैं। वास्तव में यह मानसिक शान्ति उत्पन्न करने वाला पदार्थ है। यह गम्भीर मानसिक रोगों के काम में आती है। इनमें क्लोरो प्रामाईमसिन प्रवोमेट प्रीप्राडोल का अधिक उपयोग किया जाता है। अनेक व्यक्ति उनके काराणों से ट्रेक्यूलाइजर का प्रयोग करते है।

1. सवैगात्मक परेशानियों को दूर करने के लिए।
2. अपनी कार्य क्षमता बढ़ाने के लिए।
3. अनेक दवाओं के प्रभाव को कम करने के लिए।
4. अधिक से अधिक नशा करने के लिए।

PIF/6.500 *ASVS Reg. No. AZM 561/2013-14*

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

ट्रेक्यूलाइजर का वर्गीकरण भी किया गया है। जैसे–थोजाइन का प्रयोग मानसिक रूप से बीमार व्यक्तियों को ठीक करने के लिए किया जाता है।

कुछ उत्तेजक दवाईयाँ और उनकी विषेशताएं –

कोकीन –यह प्रकृति से प्राप्त किया जाता है और "एरिथ्रोजइलोन कोका" नामक पौधे से प्राप्त किया जाता है। यह पौधा दक्षिण अफ्रीका में पाया जाता है। इस पौधे की पत्तियों को सुखा कर पाउडर बना लेते है फिर उसमें सोडियम कार्बोनेट मिलाया है। बाद में पेट्रोलियम ईथर द्वारा निष्कार्षण से पृथक कर लेते हैं। इसमें गन्धक का तेजाब मिलाकर मणिम रूप में प्राप्त कर लेते हैं। कोकीन रंगहीन–घुलनषील पदार्थ है। यह प्रकाशीय सक्रीय पदार्थ है। यह मिथायलएस्टर आफ बेन्जायल एगोनीन है। इसमें मुक्त कार्बोजेलिक समूह होता है। इसके प्रयोग से क्यूकस झिल्ली प्रभावित होती है और सिरदर्द रहता है। इसकी मात्रा प्रयोग करने वालों को यह महसूस होता है कि त्वचा के नीचे कीड़े रेंग रहे हैं।

मारफीन – यह भी प्रकृति में अफीम के पौधे से प्राप्त की जाती है। अफीम के पौधों को पापावर सोमनी फेरम कहते है। इसके फल से रस निकाल कर सुखाकर अफीम बनायी जाती है। अफीम में बहुत से एल्कोलाइड होते हैं। उनमें से मारफीन का निष्कर्ष या मिथिलीन कलोराइड द्वारा किया जाता है। इस निष्कर्ष में माफीन, कोडिनीन आदि प्राप्त होते हैं। बेन्जीन डालकर माफीन पृथक कर लेते है। माफीन का उपयोग शल्य क्रिया में रोगी को बेहोश करने के लिए किया जाता है। माफीन को फिनर्थिन, ट्राई फिनाइल ईथर, पिपरिडीन युक्त संयोजक माना जाता हैं। इससे पिरिडीन, पेर्थिडोन और मेथेडीन दवाईयां बनाई जाती हैं।

हेरोइन – मॉफीन के साथ एसीटिक एनहाइडाइड की क्रिया से हेरोइन बनायी जाती हैं। इसका रासायनिक नाम डाइ एसीटायल माफीन हैं। यह माफीन से दस गुना अधिक शक्तिशाली है। इसलिए अधिक हानिप्रद है। यह कफ दर्द, निवारक के रूप में प्रयोग की जाती हैं। अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में इसका मूल्य बहुत है। इसलिए इसका अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर तस्करी होता है। यह मनुष्य को आसनी से आदी बनाता है।

केनेवीस उत्पाद – मरिजुआना, हशीश, गांजा, मेरीजन, ऐसे औषधि उत्पादन है जो भांग "हेम्प" के पौधे से उत्पादित किये जाते हैं। भांग का पौधा केनेविस से लिया जाता हैं। इस पौधे में डेल्टा जीटेट्रा हाइड्राकेनेपीनोल नामक चिपचिपा पदार्थ होता है। यही रसायन नशा का कारण होता है।

हशीश –हशीश भांग के पौधे से प्राप्त किया जाता है। टहनियों के अन्त में गाढ़ा काला चिप–चिपा सा पदार्थ जिसे हशीश कहते हैं। हषीष अधिकतर धुम्रपान द्वारा ली जाती है। परन्तु कभी–कभी इसे खाया जाता है। इसका प्रभाव शुरू से धीरे–धीरे होता है किन्तु काफी देर तक रहता है।

ब्राउन शुगर – यह हेरोइन का अशुद्व रूप है। इसे बनाने के लिए हेरोइन के साथ चुना, साइनेट, कुकेन आदि मिलाया जाता है। कुछ लोग हेरोइन के साथ जिंक आक्साइड धतूरा के बीज भी मिलाते हैं। यह केवल नशाकारक ही नहीं बल्कि यह एक प्रकार का विष भी हैं।

एल0एस0डी0 – इसका पूरा नाम लाइसर्जिक एसिड डाइ एथाइल एमाइड है। मानसिक तनाव कम करने के लिए इसका प्रयोग किया जाता हैं। यह भी एक प्रकार की नशीली दवा है।

सिलसेसाविन – यह मैक्सिको में पाये जाने वाले कुकुरमुत्ते, सिलसाइव मक्सिआना का सक्रिय तत्व है। इसका प्रभाव एल0एस0डी0 से कम होता है।

बार ब्यूरेटस – यह पदार्थ नींद लाता हैं। यह बेशेनल बार ब्यूरेटिक अम्ल से बनाया जाता हैं। इसका रासायनि कनाम 5–5 डाइ इलाइलवार ब्यूरिट्स है। वाद में ल्यूमिनल आर सकाजल दवाइयां बनायी गयी। बार–बार ब्यूरिट्स लेने से ष्वसन क्रिया पर प्रभाव पड़ता है। बीटा डाइ इथाइल एमिनो इथाइल 2–2 डाई फिलाइल बेलरेट दवा नींद वाला दवा से 39 गुना अधिक प्रभावशाली है।

कोर्टीसीन – शारीरिक पीड़ा मानव के लिए समस्या है। कई बार हड्डियों के बीच जो बेध होते हैं उनमें दर्द और सूजन आ जाती है। इसके लिए कोर्टीसीन दवाइयों का प्रयोग किया जाता है। अधिक समय तक इसका सेवन करने से शरीर में खनीज पदार्थो के संतुलन में बाधा आ जाती है। जिससे अन्य समस्यायें उत्पन्न हो जाती है।

मादक द्रव्यों को बनाने की विधि व उनका प्रभाव – नारकोटिक्स षब्द ग्रीक भाषा के शब्द नारकोटिकोसेस बना। जिसका अर्थ तुरन्त कर देना या चेतना शून्य कर देना होता है। हिन्दी में नारकोटिक्स के लिए व्यापक शब्द का प्रयोग किया गया है। साधारणतः नारकोटिक्स एक ऐसे पदार्थ को कहते है जिसका सेवन पीड़ा कम करता है, निद्रा लाता है और अधिक मात्रा में लेने पर मदहोशी, अचेतना और यहां तक कि मृत्यु का कारण बन सकता है।

औषध शास्त्र में नारकोटिक शब्द का अर्थ सामान्यतः अफीम तथा अफीम से व्युत्पन्न तत्व या उनके संश्लिष्ट प्रतिस्थापकों से लिया जाता है। नारकोटिक्स ड्रग्स एण्ड साइकोट्रोपिक सब्सटेंसिज एक्ट 1985 (व्यापक औषधि एवं

PIF/6.500 *ASVS Reg. No. AZM 561/2013-14*

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

मनप्रभावी पदार्थ अधिनियम 1985) के अनुसार नारकोटिक्स ड्रग्स का अर्थ अफीम तथा अफीम से व्युत्पन्न तत्व, पोस्ता तना के सन्द्रक गांजा तथा औषधि गांजा कोका पत्तियाँ तथा कोका के व्युत्पन्न तत्व से है। उक्त अधिनियम में मनप्रभावी वस्तुओं के लिए एक अन्य शब्द ''साइक्रोट्रोपिक सब्टेन्स'' (मनप्रभावी पदार्थ) का अर्थ अधिनियम की सूची निर्विदिष्ट मनप्रभावी पदार्थ का अनुसूचि में सम्मिलित प्राकृतिक संश्लिष्ट पदार्थ या प्राकृतिक तत्वों या लवणों या ऐसे पदार्थ अथवा तत्वों के संपाक से है।

यदि नारकोटिक्स शब्द का परिभाषा के सन्दर्भ में देखा जाए तो तीन प्रकार का नारकोटिक्स है।

1. प्राकृतिक मूल का नाराकोटिक्स जो अफीम, मारफीन, कोडीन तथा एमेन है।
2. अर्थसंश्लिष्ट नारकोटिक्स जो हेरोइन, हाइड्रोमाफीन आक्सीकोडोन एवं इर्टफाइन तथा डिपरेन फाइन है।
3. सश्लिष्ट नारकोटिक्स जो मैपरडीन (पैथीडोन) एवं मैथाडोन तथा सम्बन्धित औषधित है।

परन्तु जैसा ऊपर बताया गया है नारकोटिक ड्रग साइकोट्रोपिक सब्सटेन्सिज एक्ट 1985 में नारकोटिक ड्रग का परिभाषा अधिक विस्तृत है।

और ऐसे पदार्थ जिन पर उक्त एक्ट लागू होता है का मुख्य वर्गीकरण है।

1. नारकोटिक ड्रग
2. साइकोट्रोपिक सब्सटेंसिज के रूप में है।

हम अपनी सुविधा अनुसार सभी नारकोटिक ड्रग्स एवं साइकोट्रोपिक सब्सटेब्यज का निम्नलिखित वर्गीकरण करके उनका अध्ययन करते हैं।

अ) अवसाद पादार्थ– इनमें अफीम, अफीम से व्यूत्पन्न पदार्थ बारवियुरेटस।

ब) उत्तेजक पदार्थ

स) भ्रान्तिकारक या मति विभ्रात्मक पदार्थ

आवश्यक पदार्थ – अवसादक पदार्थ ऐसे पदार्थ का यौगिक है जो केन्द्रीय तन्त्र का गतिविधियों को हटाकर उसे प्रभावित करती है। पिछले पृष्ठों में इसकी संक्षेप में थोड़ी बहुत चर्चा की गयी है।

अफीम व अफीम से व्युत्पन्न तत्व – अफीम भारतवर्ष के लिए कोई नई वस्तु नहीं है। सदियों से इसकी खेती की जा रही है। तथा सेवन किया जा रहा है। अफीम या पोस्ता के पौधे को अंग्रेजी में ओपियाम पौपी कहते है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. Rindesmith, A.R. (1968) "Addiction and Opi ates", Aldine, Chicago.
2. Sethi, B.B. & Trivwdi, J,K.. (1979). "Drig abuse in a rural population, Indian Journal of Psycgiatry, 21. (3), 211.
3. Sethi, B.B & Manchanda, R. (1978), "Pattern of dtug abuse among male students", Indian Journal of Psychiatry, 20, 166.
4. Sulher-Land, E.H., & S. Gressey, D.R.(1965), "Principles of Giminoligy, 6th edition, Bombay; Times of India Press".
5. Stark, R. (1975), "Alcoholism and Drug Ad diction in Social problem, p. 102. Torno : Random House".
6. Singh, G., (1979), "Drug use among medical students - 1, Prevalence and pattern of user, among Journal of Psychiatry. 21 (4) 332.
7. Shamnarayan T.E. (1978), "A Study of dtug abuse among college students, Unpublished project".
8. Shrma, Davis, Roy & Roy. A.K. "Hereditary factors in psychoses precipitated by cannabis abuse". paper in 30th IPS conference, "Ab stracts". P. 90.
9. Suresh Kumar, Ramchadran & Others, "Psy chosocial & Behavioural characteristics of Heroin (Brown sugar) abusers". paper in 30th IPS conference, "Abstracts". p. 89.

*****

PIF/6.500 *ASVS Reg. No. AZM 561/2013-14*